यीशु कौन है?

वह एक असहाय शिशु के रूप में पृथ्वी पर आए, एक विनम्र और युवती के गर्भ से जन्मे, जिसने चमत्कारिक रूप से उन्हें गर्भ में धारण किया था। यद्यपि वे "राजाओं के राजा" बनने के लिए नियत और पूर्वनिर्धारित थे, फिर भी उनका जन्म किसी महल में आदर-सम्मान के बीच नहीं हुआ। इसके बजाय, उनका जन्म एक अस्तबल के गंदे फर्श पर हुआ, गायों और गधों के बीच; उन्हें कपड़ों के टुकड़ों में लपेटा गया और पशुओं के चारे की नांद में लिटा दिया गया।

उनका जन्म मानव समाज में किसी बड़े उत्सव या सम्मान के साथ नहीं मनाया गया, परंतु उसी रात पास के एक पहाड़ पर कुछ गरीब चरवाहे आश्चर्यचकित रह गए, जब एक तेजस्वी प्रकाश आकाश में चमका और स्वर्गदूतों की एक सेना ने यह घोषणा की—"सर्वोच्च परमेश्वर की महिमा हो! पृथ्वी पर शुभ-इच्छा रखने वाले मनुष्यों को शांति मिले! क्योंकि आज तुम्हारे लिए उद्धारकर्ता, मसीह प्रभु का जन्म हुआ है।"

उनके सांसारिक पिता एक बढ़ई थे—लकड़ी का काम करने वाले एक साधारण व्यक्ति, जिनके साथ यीशु ने जीवन बिताया और कार्य किया। उन्होंने हमारी मानवता का रूप धारण किया ताकि वे हमें बेहतर समझ सकें, हमसे प्रेम कर सकें और हमारी सीमित समझ के भीतर हमसे संवाद कर सकें। उन्होंने हमारे दुखों को देखा और हम पर दया की।

जब उन्होंने अपने जीवन का कार्य प्रारंभ किया, तो वे हर जगह भलाई करने लगे—लोगों की सहायता करना, बच्चों से प्रेम करना, दुखों को दूर करना और थके हुओं को बल देना। उन्होंने केवल अपने संदेश का प्रचार ही नहीं किया, बल्कि उसे अपने जीवन में जीकर दिखाया। उन्होंने लोगों की आत्मिक और शारीरिक आवश्यकताओं की परवाह की, बीमारों को चंगा किया, भूखों को भोजन दिया और सबके साथ प्रेम साझा किया। वे समाज के तिरस्कृत और दबे-कुचले लोगों के बीच रहे और स्वयं को प्रसिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया।

जब उनका संदेश और प्रेम का संदेश फैलने लगा और उनके अनुयायी बढ़ने लगे, तब धर्म के नेताओं ने उन्हें अपने लिए एक खतरा मान लिया। उन्होंने यीशु को झूठे आरोपों में गिरफ्तार करवाया और मुकदमे में प्रस्तुत किया। राज्यपाल ने उन्हें निर्दोष पाया, फिर भी दबाव में आकर उन्हें मृत्युदंड दिया गया।

उनका शरीर कब्र में रखा गया, परंतु तीन दिन बाद वे मृतकों में से जी उठे—मृत्यु, नरक और कब्र पर विजय पाने वाले! उस ऐतिहासिक दिन से लेकर आज तक, दो हजार वर्षों में, यीशु मसीह ने इतिहास, सभ्यता और मानवता की दिशा को जितना बदला है, उतना किसी और नेता, समूह, शासन या साम्राज्य ने नहीं किया। उन्होंने करोड़ों लोगों को निराशा और अंधकार से बचाया है और जो कोई उनके नाम को पुकारता है, उसे परमेश्वर का प्रेम और अनंत जीवन दिया है।

यह व्यक्ति, यीशु मसीह, केवल एक दार्शनिक, शिक्षक, रब्बी, गुरु या नबी मात्र नहीं हैं। वे परमेश्वर के पुत्र हैं। बाइबल कहती है कि "परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8), और क्योंकि उसने संसार से प्रेम किया, इसलिए उसने यीशु को मनुष्य के रूप में भेजा ताकि वह हमें दिखा सके कि स्वयं परमेश्वर कैसा है और हमें अपने पास ले आए। यीशु ने संसार के पापों के लिए प्राण दिए और मृतकों में से जी उठे ताकि हम परमेश्वर से मेल-मिलाप कर सकें।

यीशु मसीह ही उद्धार का एकमात्र मार्ग हैं। वे आपसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने आपके पापों के लिए कष्ट सहा, ताकि आपको न सहना पड़े—यदि आप उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करें और उनका अनंत जीवन का उपहार ग्रहण करें।

आप व्यक्तिगत रूप से यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित कर सकते हैं इस प्रार्थना के द्वारा:

प्रिय यीशु,
मैं आपको जानना चाहता/चाहती हूँ।
मेरे लिए अपना जीवन देने के लिए धन्यवाद।
कृपया मेरे सारे पाप क्षमा करें।
मैं आपसे निवेदन करता/करती हूँ कि मेरे हृदय और जीवन में आएँ,
मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर दें,
और मुझे अनंत जीवन का मुफ्त उपहार दें।
आमेन।

© 2022 Activated
To learn more, visit our website at: https://activated.org/en/.